तबला वादन की प्रारम्भिक विशेषताएं

डॉ. दलीप शर्मा
तबला सहायक, संगीत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

संगीत में गायन, वादन, नृत्य तीनों का समावेश है। यदि हम गीत या गति को निकाल दें, ताल के साथ गायन–वादन करने की क्रिया की पृथक कर दें तो मात्र आलाप शेष रहेगा अर्थात संगीत, संगीत न रहकर, आलाप का रूप धारण कर लेता है वह निर्जिव हो जाएगा। इसी प्रकार यदि नृत्य में भी ताल के अंग को पृथक कर दें तो वह एक दम जीव विहीन हो जाएगा। अतः गायन, वादन तथा नृत्य में संगीत को जीवित रखने वाला, जीवन डालने वाला, रीड़ की हड्डी की तरह है ताल, जो संगीत का आधार जाना जाता है। यदि संगीत का आधा अंग स्वर है तो उसका पूरक आधा भाग ताल है। इसलिए प्रत्येक संगीत विद्यार्थी को तबला वादन के विषय में जानना आवश्यक है।

तबला विषय ही क्यों? उतर है खुले, बंद बोलों को तबले पर सरलता से निकाला जा सकता है। गायन, वादन, नृत्य के साथ उत्तमता से बजता है। हल्का होने के कारण आसानी से ले जा सकते हैं। उंगलियों का बाज होने से सभी लयों के बोलों को व द्रुत गति लय में बजा सकते हैं। तबले के गुरू भी आसानी से मिल जाते हैं। इसके दोनों मुखों पर स्याही होने के कारण, पखावज के समान गीले आटे की जरूरत नहीं होती।

पखावज के प्रचार,–प्रसार के कम होने के कारण
आकार का होना – बाएं मुख पर गीले आटे को तैयार रखना, उंगलियों की अपेक्षा पखावज हथेली से बजने के कारण लय को द्रुत गति में न बजा पाना, ध्रुपद गायन का कम होना आदि से पखावज का प्रचार कम होता गया। ख्याल गायन में ठेका प्रमुख होता है परन्तु पखावज संगत का वाद्य है। नृत्य के साथ पेट में बांध कर असंभव होना, खुले, बंद बोलों को बजाना कठिन लगना, तबले पर आसानी से, व्यवहार में लयानुसार खुले, बन्द बोल का बजाना सरलता का लगना गुणी लोगों में क्रम से तबला वादन का प्रचार बढ़ता गया और पखावज का प्रचार, प्रसार कम होना स्वाभाविक हो गया।

तबला के प्रचार–प्रसार के बढ़ने के कारण
अच्छे गुरू का होना –तबला सीखने से पहले हमारा गुरू अच्छा अर्थात अच्छे गुरू का शिष्य हो, गुरू विधिवत शिक्षा ग्रहण हमारी बैठने का तरीका, तबला रखने का ढंग, हाथों का रखाव, बोलों की निकासी, एकांकी वादन का नियम सही गुरू की पहचान होती है।

तबला वादन की तैयारी व मिठास – तबला वादन में जितनी तैयारी होगी अर्थात रियाज़ होगा उतनी ही मिठास आपके वादन में आएगी। अतः बोलों की स्पष्टता, सुन्दरता होगी स्वयं मिठास अनुभव करेंगे। यदि आपके बोल स्पष्ट न बजकर केवल मात्र वज़न पूरा करने लगे आप अपने आप महसूस करने लगेंगे कि आपके वादन की मिठास खत्म हो गई। बढ़ी हुई लय में आपके बोल उसी जोरदार से निकलें जितने मध्य लय में थे। लय ज्यादा होने से आपके वादन में श्रोताओं को कमजोरी प्रतीत नहीं होनी चाहिए।

अभ्यास की विधि – सर्वप्रथम तबले के छात्रों को योग्य गुरू के सानिध्य में रहकर उंगलियों के रख–रखाव से सम्बन्धित बातों की जानकारी लेनी चाहिए। कहावत चरितार्थ है ''बिन गुरू होत न ज्ञान''। शुरू में ही यदि हाथ का रख रखाव गलत हो जाता है तो जीवन भर पछताना पड़ता है। अतः प्रारम्भिक अवस्था में ही अच्छे गुरू का सानिध्य प्राप्त करना अति अनिवार्य हैं। अच्छे गुरू का सानिध्य उत्कृष्ट प्रारलब्ध की देन मानी जाती है। कुछ लोगों का अनुमान है कि हाथों की तैयारी ही उतम तबला वादाके की पहचान है, परन्तु स्वयं का मानना है कि हाथों में मिठास, बोलों का भण्डार हो तभी सिद्ध तबला वादक बनने का स्वप्न पूरा हो जाता है।

उंगलियों के रखाव – हाथों के पांच उंगलियों में तर्जनी की जोरदार आवाज चांटी पर हो, कनिष्ठा अनामिका साथ या छूता रहे, अंगूठा हमेशा तर्जनी में लगा रहे एवं मध्यमा सदा खड़ा रहे यानी मध्यमा को अनामिका में चिपटना नहीं चाहिए । सही उंगलियों का रखाव ही एक अच्छे वादक की पहचान होती है।

साधना या रियाज– किसी भी कायदे को पहले बिलम्बित लयों में पूर्णरूपेण बजा लें, उसके बाद क्रमशः थोड़ा–थोड़ा लय बढ़ाकर पुनः उस लय में कुछ देर अभ्यास करने के बाद ही लय बढ़ायें। बोलों को रियाज करते समय लय ही वही रखें जहां आप का हाथ थके या बजाने में थोड़ी परेशानी (आराम करने का मन) लगे। इससे आपके हाथ की तैयारी, सफाई व अभ्यास की विधि सुगम होगी। इस प्रकार बायें पुड़ी पर स्याही के उपर उंगलियों को सदा एक साथ जुड़ा रखकर अभ्यास करें। अभ्यास के समय आसन का भी विशेष ध्यान रखना, पाल्थी लगाकर या वीरसन से दोनों घुटनों को उल्टें जमीन पर टेक कर अभ्यास करना चाहिए। तबला वादन के साथ हाथ को ज्यादा हिलाना या सिर को बराबर झटका देना अवगुण माना गया है।

कायदे, पेशकार का अभ्यास प्रस्तार के साथ उलट–पलट करके बजाने से प्रदर्शन करते समय हाथ में रूकावट नहीं आती। बजाते समय मुद्रा का प्रसन्न रहना, कठिन से

कठिन लयकारियों के समय चेहरा न बिगड़े, अत्यन्त अभिरूचि पूर्वक वादन करना, ताल, लय का ज्ञान न होना, गीत, वाद्य, नृत्य के अनुसरण करने की योग्यता न रखना, वादक के इनसे रहित गुण है।

एकांकी वादन – एकांकी वादन में पेशकार, कायदा पलटा, रेलों, गीतों से मधुता आती है परन्तु कायदों को अधिक महत्व दिया जाता हैं। कायदों की खाली भरी अनुसार इस प्रकार बजाया जाता है कि बंधे हुए बोलों की पुनरावृति अप्रिय प्रतीत होने की अपेक्षा बहुत सुन्दर लगती है। अच्छे वादक एक ही कायदे के बल खोलने में, अतः उलट–पलट करने में अधिक से अधिक समय लगा देते हैं। कायदों में लय की भिन्नता का आनन्द रहता हैं उदाहरण दिल्ली के नत्थु खां साहब का बाज कायदे का बाज के नाम से मशहूर था। पहले विलंबित लय में पेशकार, कायदे, पलटें बजाने की प्रथा थी। इसके उपरान्त मध्य लय में गत, परन, चक्रदार गतें बजाई जाती है। अन्त में द्रुत लय में रेलें तथा अन्य बोल बजाकर वादन समाप्त किया जाता है। परन्तु पूर्व बाज में लम्बी उठान के बाद परन टुकड़े और चक्रदारों को अधिक महत्व दिया जाता है। एकांकी वादन में दो प्रमुख बातों को ध्यान में रखा जाता है लय क्रम से बढ़ती रहे व बोलों का चयन सुन्दर व प्रभाव वाला हो, आपका वादन फीका न पड़े अतः बोल एक के बाद एक प्रभावोत्पादक आता रहे। इन सभी का एक साथ समागम रहने पर ही तबला एकांकी वादन संगीत में सबके द्वारा वाहवाही लेकर अपनी कला के भविष्य को उज्ज्वल बना सकता है।

गायन, वादन व नृत्य की संगति – वर्तमान समय के ताल वाद्यों में तबला वादन का सर्वोच्च स्थान है। भारतीय संगीत में सभी प्रकार के संगीत के साथ तबला, संगत किया जाता है। अतः यह स्वीकार योग्य है कि तबला संगीत का अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग हैं तबला वादक को स्वतंत्र वादन के साथ–साथ ध्यान रखना चाहिए कि तबला सोलो के क्षेत्र में संगीत का और ही सर्वोत्कृष्ट महत्वपूर्ण स्थान है। अधिकतर संगीत की सफलता तबले की अच्छी कुशलतापूर्ण संगति से ही मापी जाती है जो ह्रदय को भाती है।

वादक को सर्वप्रथम गायक की आलापचारी को ध्यान से सुनकर, समझकर आने के लिए एक बोल गायन बजाकर ठेका लगाना चाहिए। स्थायी, अन्तरा एवं तान के साथ बोल न बजाकर मात्र ठेका बजाना चाहिए। गायक की रूचि के अनुसार, अवलोकन करते कभी–कभी उसी तान की लयकारी के साथ मिलते–जुलते बोलों द्वारा संगति कर एक अच्छे संगत कार माने जाते है।

संगत उतम एवं आसान तरीके से की जानी चाहिए। यह सर्वविदित है कि जितनी अच्छी संगत होगी गायक की अभिरूचि बढती चली जाएगी। गायक का गायन अपने आप वादक की संगति से जमेगा तो अवश्य संगतकार की सराहना, प्रशंसा निश्चित रूप से होगी।

तन्त्र वाद्य के साथ भी इसी प्रकार की संगत की जाती हैं परन्तु गायन में अधिक बोल नहीं बजाये जाते है तार वाद्य के साथ उनकी विभिन्न लयकारियों के अनुसार बोल बहुत परिश्रम साध्य ढंग से बजाये जाते हैं। द्रुत लय अथवा झालो के साथ संगति के लिए पूर्ण तैयारी तथा विभिन्न प्रकार की लयकारियों में विभाजित कर वजन को समझ कर बजाना चाहिए। हम अपने संगीत क्षेत्र की विशालता का अनु मान तभी लगा पाएंगे जब हमें ज्ञान होगा कि कौन सी शैली के साथ किस प्रकार की संगति की जाएगी। गायन के अन्तर्गत या तार वाद्य में विलम्बित में हम सिर्फ ठेका लगाते हैं परन्तु मध्य लय में संगति के लिए कुछ बोलों का बजाना क्षमतानुसार अनिवार्य हो जाता है। ठुमरी के साथ गायन के अन्तिम क्षण में लग्गी–लड़ी का काम करना अत्यन्त आवश्यक हो जाता हैं। वैसे ही ध्रुपद धमार के क्षेत्र में लय कारी के साथ संगत करना गायन को चमत्कारपूर्ण बना देता है।

नृत्य की संगति के लिए तबले की शिक्षा, विभिन्न उस्तादों की अनुभवी बोल, विभिन्न घरानों की बन्दिशे एवं लय कारी का ज्ञान रखना अच्छे वादकों के लिए विशिष्ट तत्व माना जाता है। जब नृत्यकार, नृत्य प्रस्तुत करने के लिए खड़े हो तब एक अच्छा टुकड़ा बजाकर सम पर आयें, नृत्यकार जिन टुकड़ों या परणों के समूह को पढें उसे आप ध्यानपूर्वक सुनें तथा बाद में उन्हीं टुकड़ों, परणों या उससे मिलते जुलते टुकड़ों परणों से भी नृत्य अथवा स्वयं का एकांकी वादन उक्त समय लय का घटना बढ़ना निर्धारित लय क्रम सक दोषपूर्ण माना जाता है। अतः समानान्तर लय को कायम रखना आवश्यक ही नहीं अपितु अति आवश्यक माना जाता है। संगति की प्रत्येक क्रिया की समुचित जानकारी, सूझ–बूझ रखना अत्यन्त ही आश्यक तत्व के रूप में देख जाता है अन्यथा उक्त बातों को नजरंदाज करने से संगीत में अस्वाभाविकता उत्पन्न होने की सम्भावना बनी रहती हैं। संगति करने में सूझ ईश्वरीय देन और अनुभव द्वारा प्राप्त किया जाता हैं। इन सभी बातों का समावेश ही एक सफल संगीतकार की उपाधि प्रदान करता है।

तबला मिलाना – भारतीय वाद्यों को मिलाना कठिन ही नहीं बल्कि एक बारीक कला हैं। चर्म वाद्य को मिलाना कठिन अवश्य पड़ता हैं। तबला वादकों को इसके लिए स्वरों का ज्ञान भी रखना अति आवश्यक है। गायक या तार वाद्य के साथ पर तबला

मिलाकर कभी–कभी गायक पंचम स्वर या राग के वादी स्वर में भी तबला मिलवाते हैं। अतः आप किस स्वर में तबला मिलाना चाहि उसे ध्यान से सुनें।

ध्यान से सुनने के उपरान्त देखें तबला कहां मिला हैं। स्वरों का उपर नीचे लगना इस बात का अच्छी तरह समझें। मान लीजिए तबला दो स्वर नीचे बिखरा है तो उसी वक्त तबले के व्यास को चार बराबर भागों में बांट लें, कोई भी एक भाग को गटटे पर चोट देकर उस स्वर में मिला ले, थोड़ी स्वर में कमी लगने पर गट्टे पर आघात न करके गजरे पर प्रहार करें उपर–नीचे कर लें उसके बाद ठीक उसके सामने वाले भाग को मिला लें। यदि संभव हो आप स्वयं थाप लगाकर सुन लें, बेसुरा या कम्पनचुक्त मालूम दे तो पुनः भली भांति चारों घाट को देंखें, स्वर में थाप समा जाये तो समझें कि तबला मिल गया। तबले को मिलाते वक्त हमेशा प्रहार गजरे पर करें अन्यथा ज्यादा प्रहार गजरे पर करने से पुड़ी फटने की आशंका रहती है। दूसरे यदि पुड़ी पर बराबर पाउडर का प्रयोग रहता तो उसे भी हथौड़ी की डंडी से निकाल दें जिससे आप की पुड़ी की आंस गुंजदार बनी रहे।

तबले को बराबर एक ही स्वर में मिलाना चाहिए इससे तबला सही मिलता भी है तथा पुड़ी भी टिकाउ रहती है। पुड़ी को अलग–अलग स्वर में मिलाने से न सही स्वर पर मिलती नही पुड़ी में टिकाउपन रहता, पुड़ी को उपर नीचे मिलाने से इसका फटने का डर रहता है। दायां तबला जिस स्वर मे मिला हो ठीक उसी के खर्ज स्वर में बायां को मिला लें, कभी–कभी बायां नीचे सप्तक के पंचम से भी मिलाया जाता है।

यदि आप का तबला सही स्वरों में मिला हो तो वादन में या संगति के वक्त उससे मनमोहक रसों की उत्पति होती है। कभी भी बेसुरे तबले पर रियाज न करें। तबला वादक को सही तबला मिलाने हेतु स्वर ज्ञान रखना परमावश्यक है। इसलिए प्रत्येक वादक या छात्र को गायन का ज्ञान या सम्बन्ध रहना तबला के हित में अत्यन्त उपयोगी माना जाता हैं।